❑कविता

मरण-पंथ रा पंथी

सुमनेश जोशी

कवि परिचै

सुमनेश जोशी रौ जलम जोधपुर में होयौ। आप डील-डौल सूं सैंठा, काम-काज में मैनती, लगन रा पक्का अर कलम रा धणी हा। सरीर मुजब ई मन ई मोटौ हौ आपरौ। देसी राज्यां री राजनीतिक क्रांति में आपरै त्याग अर बळिदान री चरचावां घणी चावी है। देस रै वास्तै साची प्रीत रै कारण वै राज री नौकरी छोड-छिटकायनै आंदोलनकारियां रै भेळा भिळग्या। संवेदनसील होवण रै कारण वै घर-परिवार सूं बेसी देसहित में आपरै करतव्य रौ पाळण करयौ। जोशी आपरै गीतां अ रचनावां सूं क्रांतिकारियां में जोस जगायौ, उणां नै चेताया। क्रांति रा गीत लिखणा कवि रौ करम हौ। सामंती जुलमां सूं आंती आयोड़ा मिनखां नैं उबारण वास्तै लेखणी रौ जोर लांठौ हौ। आपरा गीत आजादी सारू लड़णिया सिपायां खातर जीवण-जड़ी हा। जणा-जणा रा मूंडा माथै उणां रै गीतां रा बोल, उणरा भाव सूं जाग्योड़ौ ओज हौ। अै गीत क्रांति री लपटां में 'बळती में पूळा' रौ काम करयौ। आजादी रै पछै ई कवि आपरी कलम हेटी नीं न्हाखी। उणीज ओज अर जोस सूं नूंवै उछाह साथै नव-निरमाण रा गीत लिख्या। आपरौ गीत संग्रै राजस्थान सरकार रै सार्वजनिक संपर्क कार्यालय सूं छपियौ हौ। केई अबखायां अर मानसिक चिंतावां रै पछै ई सुमनेशजी में आस-विस्वास, हिम्मत, मरदानी गाडां-गाडां भरयोड़ी ही। आपरा गीतां में अै सगळी विसेसतावां है। सेनानियां रै इतिहास रौ अेक मोटौ ग्रंथ ई आप छापियौ। इणरै ओळावै मायड़भोम रा वां सपूतां नैं स्रद्धांजळी दी।

पाठ परिचै

'मरण-पंथ रा पंथी' क्रांतिकारी कवि सुमनेश जोशी री रचना है। इण रचना में कवि रै सुभाव मुजब त्याग अर बळिदान री बात प्रतीकां रै ओळावै कहीजी है। अेक बीज आपरौ आपौ मेटै जद अणगिण रूंख ऊगै। बादळ खुद नैं मिटावै जद बिरखा बूठै। दीवौ बळनै उजास रौ पसराव करै। झरणौ परबतां सूं नीचै आवै जठै तांई ई उणरौ रूप रैवै पछै वौ नदी-नाळां रौ रूप लेय लेवै। कवि कैवै कै औ मानखौ बीज सूं ऊग्योड़ा रूंखां नैं, दिवलै रा उजास नैं, बिरखा अर बैंवता झरणां नैं देखै, उणरै लारै जिकौ त्याग है उणनैं अर आपौ मेटण री बात कुण देखै? आ तौ उणां री नियति है। घणा रंग वां धरती रा जायोड़ां नैं, जिका खुद मिट'र समाज अर देस नैं कीं देयनै जावै। त्याग अर बळिदान देवणिया जस री बाट नीं जावै। उणां रा जस गीत गाईजै कै नीं। वांनै कोई याद करै कै भलांई नीं करै। आपरौ फरज, करतव्य समझनै वै करम करै। इण माटी रा सपूतां में अर प्रकृति रा कण-कण में त्याग अर समरपण रा भाव है। अेक रौ विणास अर दूजै रौ सिरजण, आ प्रकृति री रीत है। कर्मठता, त्याग, बळिदान, समरपण री सीख इणसूं मिळै तौ नव-सिरजण री प्रेरणा ई आं प्रतीकां सूं मिळै। सहज अर सरल सबदां में कवि आपरै अंतस रा भावां नैं उकेरिया है। 'मरण-पंथ रा पंथी' मतळब जिका म्रित्यु रै मारग आगीवाण होयनै चालै अर समाज नैं नूंवी दिसा देवै।

देस री आजादी में कितरा मायड़ भोम रा सपूत बीज बण आपरौ बळिदान दियौ। बदळै में आजादी रूपी हरियल रूंख री छिंया आपां नैं सूंपी। आजादी रूपी महल नैं ऊभौ करण खातर कित्ताक अचळेसर नींव नीचै दबिया होवैला, कांई उणां रा बळिदान नैं आपां याद करां? खुद नैं मिटावण वाळा वै सपूत, वै स्वतंत्रता सेनानी जस रा भूखा कोनी हा। कवि इण गीत सूं वां स्वतंत्रता सेनानियां रै त्याग अर बळिदान नैं याद करै।

मरण-पंथ रा पंथी

माटी में मिल गया बीज जद,
ऊग्या रूंख हजारा
आपौ मेट, मिट्यौ जद बादळ,
फूटी जळ री धारा

दिवलो जळ-बळ मिल्यौ खाक में,
कर्‌यौ जोत उजाळौ
मरण बांध कूद्यौ सिखरां सूं,
वौ झरणौ मतवाळौ

वौ झरणौ मतवाळौ—
उण रौ मरण-पंथ कुण देखै
जग तौ प्रीत करै ज्योती सूं,
बळणौ करमां लेखै

बीज गया पाताळ,
धरण सूं ऊंचा तरवर छाया
नीवां में गड गया—
उणां रा गीत न कोई गाया

कोई गावै गीत, न गावै,
उणनैं कद अभिलासा
मरण-पंथ रा पंथी तौ बस,
करम करण रा प्यासा

धिन-धिन वै धरती रा जाया,
जो निज आपौ मेट
नयौ रूप आकार धरा नैं,
जो कर जावै भेट

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

ऊग्या=ऊगणौ, उदय होवणौ। आपौ=असित्व। मेट=मिटायनै। फूटी=बरसी। खाक=समाप्त, मिटणौ। सिखरां=ऊंचा परबत सूं। मतवाळौ=अहम वाळौ, मद वाळौ, गीरबै सूं भर्‌योड़ौ। बळणौ=दीयै रौ जगणौ, बाती री लौ लागणी। तरवर=रूंख, बिरछ। अभिलासा=चावना, मनसा, इच्छा। गड गया=दबग्या, माटी रै नीचै दबणौ। धिन-धिन=धन्य-धन्य, लखदाद। नयौ रूप=नव सिरजण, नूंवौ निरमाण।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि सुमनेश जोशी किण भांत रा मिनख हा—

   (अ) डील-डौल, कलम नै काम सूं महाप्राण। (ब) सांस लेवण में अल्पप्राण।

   (स) डील-डौल सूं मोटा मतवाळा। (द) इण मांय सूं अेक ई नीं।

   ( )

2. सुमनेश जी रैवासी हा—

   (अ) बीकानेर (ब) जैसलमेर

   (स) पूगळ (द) जोधपुर

   ( )

3. ''धिन-धिन वै धरती रा जाया'', इणमें 'धरती रा जाया' है—

   (अ) बादळ, बीज, माटी। (ब) मायड़ भोम रा सपूत।

   (स) नदी, नाळा, झरणा। (द) अचर अर चर जगत।

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. सुमनेश जोशी किण भांत रा गीत लिख्या?
2. कवि सुमनेश जोशी नौकरी छोड'र कांई काम कर्‌यौ?
3. 'मरण-पंथ रा पंथी' कुण हा?
4. बादळ आपरौ आपौ मेटनै कांई बरसावै?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. रूंख ऊगण रै लारै कवि किणरौ किण भांत त्याग बतावै?
2. कवि सुमनेश जोशी रै व्यक्तित्व री चार विसेसतावां बतावौ।
3. कवि री रचनावां रौ संग्रै कठै सूं छपियौ अर गीतां रा भाव कांई हा?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि सुमनेश जोशी रै व्यक्तित्व अर कृतित्व ऊपर लेख लिखौ।
2. 'मरण-पंथ रा पंथी' कविता रौ भाव आपरै सबदां में लिखौ।

3. कवि सुमनेश जोशी री दीठ में मरण-पंथ रा पंथी किण मारग चालै अर औ अंवळौ मारग समाज नैं कांई देवै ? आपरै विचारां सूं खुलासौ करौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ—

1. माटी में मिल गया बीज जद, ऊग्या रूंख हजारा
   आपौ मेट, मिट्यौ जद बादळ, फूटी जळ री धारा

2. कोई गावै गीत, न गावै, उणनैं कद अभिलासा
   मरण-पंथ रा पंथी तौ बस, करम करण रा प्यासा

3. धिन-धिन वै धरती रा जाया, जो निज आपौ मेट
   नयौ रूप आकार धरा नैं, जो कर जावै भेट